# डोमकछ

डा. अनिल पतंग

बिहार के मिथिलांचल के लोकप्रिय लोकनृत्य पर आधारित लोकनाटक

# डोमकछ

लेखक

अनिल पतंग

प्रकाशक

तज्ञा-स्मृति प्रकाशन

बापूधाम, नन्दग्राम (मार्ग न.–दो) गाजियाबाद (उ.प्र.)

*बिहार के मिथिलांचल के लोकप्रिय लोकनृत्य पर आधारित लोकनाटक*

# डोमकछ (Domkachh)

रचनाकार–अनिल पतंग (Anil Patang)

प्रथम संस्करण – जून 2008.





मूल्य :– बीस रुपये मात्र

–: प्रकाशक :–

तज्ञा–स्मृति प्रकाशन, बापूधाम, नन्दग्राम,
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

# -: दो-शब्द :-

अनिल पतंग एक सार्थक नाटककार हैं। इनके नाटकों का कच्चा माल लोक परंपरा से जुड़ा है। इनके नाटकों का मुहाबरा यथार्थवादी नाटकों के प्रचलित और परिचित मुहावरों से थोड़ा भिन्न है। चूँकि पतंग जी निर्देशक भी हैं, अतः उनके लोक परंपरा से लवरेज लोक नाट्य लोक-जीवन का दिलचस्प समायोजन करते हैं। संवादों की लयात्मकता भी शैलीबद्ध वाचिक की अनिवार्यता का अहसास कराती है। 'डोमकछ' लोकजीवन और उनकी समस्याओं से जूझता हुआ लोकनाटक है। प्रस्तुतिकरण का निराला ढंग दर्शकों को रिझानेवाला है। प्यार और प्यास जाति और घाट नहीं देखते। राजा डोमिन पर रिझ जाता है। डोम व्याकुल होकर डोमिन की खोज में पागल सा इधर-उधर बौड़ाता है। यह जानते हुए भी कि वहाँ तक पहुँचना

असंभव है, किन्तु गंतव्य तक पहुँच ही जाता है। नाटक के सभी चरित्र घटनाएं, स्थितियां और व्यवहार स्वाभाविक हैं। विशिष्ट रंगानुभव की बानगी यह 'डोमकछ' है। 'एक और अभिमन्यु' जैसे एकल अभिनय वाला नाटक पतंग जी ने सैकड़ों मंच पर दिखाकर लोकप्रियता हासिल की है। रंगकर्म के प्रति समर्पित इस कलाकार का भविष्य सार्थक और कला के प्रति समर्पित रहे यही शुभकामना है। 'रंग–अभियान' पत्रिका के माध्यम से श्री पतंग जी नाट्य विधा को नये–नये कलेवर प्रदान करते रहे हैं। अपने निर्देशन में इन्होंने सैकड़ों कलाकारों का सृजन किया है। अपने क्षेत्र के ये सजे–सजाये रंगकर्मी हैं। भविष्य में और भी प्रखरता होगी। यह आशा और विश्वास इनका सम्बल बने।

**वागबारा, बेगूसराय।** **रमाकान्त चौधरी**

# भूमिका

लोक कला की स्थिति आज के पाश्चात्य चकाचौंध में कितनी दयनीय है, किसी से छिपा नहीं है। केन्द्र और राज्य सरकारों के द्वारा लाख प्रयास काग़ज का खेल बनकर रह जाता है। हर जगह पहुँच और पैरवी का बोलबाला है। कलाकारों को प्रतिशत का हिसाब कर अनुदान प्राप्त करने की परंपरा विकसित हुई है। हाँ, नाटक वे भी भ्रष्टाचार के खिलाफ ही करते हैं। जैसे घूस लेते पकड़ा गया आदमी घूस देकर छूट जाता है।

प्रस्तुत लोक नाटक **'डोमकछ'** अपने यहाँ बिहार में लगभग हर जगह पर करने की परंपरा थी, जो अब अपने उस स्थिति में नहीं है, कहीं–कहीं आज भी अवशेष के रूप में अंतिम सांस गिन रही है। इसकी महत्ता को भी स्वीकारने में लोगों को कठिनाई होती है। डोम, जो समाज में सबसे नीचे तपके लोगों में गिना जाता है। लेकिन जीवन का हर महत्वपूर्ण कार्य इनके बिना संभव नहीं है। धार्मिक और विभिन्न संस्कारों में इनकी उपादेयता और भी बढ़ जाती है। इस नाटक में वर्ण व्यवस्था का धज्जी उड़ाते हुए डोमिन को राजमहल में रानी के रूप में भी रहने की बात की जाती है।

इसके उद्‌भव काल सुस्पष्ट नहीं होते हुए भी लगभग नौवीं सदी मानी जाती है। जब बारात गाँव से चली जाती है, संपूर्ण गाँव और घर की रखवाली का भार ओरतों के कंधे पर रहता है। गाँव के हर वर्ग की महिलाएँ, जिसमें डोमिन मुख्य रूप से विद्यमान रहती हैं, एक साथ मिलकर इस लोक नाटक (स्वांग) को करती हैं। आज वर्ण–व्यवस्था का जो विकसित रूप हम देखते हैं, उस समय नहीं था।
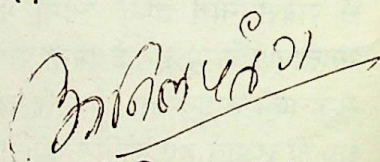
महिला सशक्तिकरण तथा सत्ता विरोध उस समय कितना था, इसकी झलक इसमें दिखती है।

*हाल कहीं गे डोमिनियां, हाल कहीं गे,*
*राजा के हवेलिया कऽ हाल कहीं गे।*
*मारि खैभीं रे डोमा, मारि खैभीं रे,*
*राजाक सिपहिया से मारि खैभीं रे।*

राज़ा की हवेली की स्थिति इतनी ख़राब है कि उसके बारे में पूछने पर भी मार खाने की नौबत आ जाती है। पुलिसिया आतंक के साथ–साथ अन्य सामाजिक विकृतियाँ इस लोक नाटक में यत्र–तत्र बिखरे पड़े हैं।

मैंने इस लोक नाटक के अबतक लगभग एक सौ पचास प्रदर्शन किए हैं, जिसे दर्शकों के द्वारा सराहा गया है। इसकी प्रस्तुतियाँ अन्य संस्थाओं और लोगों के द्वारा की जाती हैं। इस नाट्यालेख से अगर **'डोमकछ'** को पुनर्जीवित किया जा सका तो यही हमारी उपलब्धि होगी। इस नाटक की भूमिका हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार एवं मूर्द्धण्य विद्वान श्री रमाकांत चौधरी जी ने लिखी हैं यह मेरे लिए गौरव की बात है। इसके गीतों के संकलन के क्रम में श्रीमती सुलेखा (प्रिय सालेराम श्री नारायण श्रीवास्तव की पत्नी) का काफी सहयोग मिला है। इसके अलावा अनेक लोगों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग के लिए मैं सबका आभारी हूँ।

धन्यवाद।

अनिल पतंग

(अनिल पतंग)

## *समर्पित*

*लोक आस्था के प्रतीक डॉ० पी० गुप्ता
को जिनकी सतत् प्रेरणा से मैं
इस कार्य को पूरा
कर सका हूँ।*

# पात्र–परिचय

डोम
डोमिन
सूत्रधार
विपटा
मुखर्जी दा
सिपाही
राजा
हजाम
कीर्तनकार
महिलाएं
राजमाता
राजकुमारी
दासिन
चूड़ीहारा

## —: दृश्यारंभ :—

*(प्रकाश मंच पर उभरता है। शंख—घड़ियाल की आवाज़ के साथ मृदंग जोर से बज रहा है। सभी कलाकार हाथ जोड़कर प्रार्थना की मुद्रा में वन्दना करते हैं।)*

प्रथम वन्दना दाता गणेशक ,जिनकर कृपा अपार।
दूजो वन्दौं आदि शक्ति माँ, करि दियौ बेड़ा पार।
सरस्वती माँक' चरण वन्दौं, दे राग,ताल,सुर ज्ञान।
उगल सुरूजक अरज करौं,जे रोज करथि विहान।
गुरू चरणनमें शीश नवाऊँ, जिन्ह कृपा गुण खान।
वन्दौं नटवर नागर शिव को, दर्शक को बार बार।
वन्दौं नाट्य निर्देशक जी को, रहते सिरपे सवार।
प्रथम वन्दना दाता गणेशक ,जिनकर कृपा अपार।
दूजो वन्दौं आदि शक्ति माँ, करि दियौ बेड़ा पार।

विपटा :— *(प्रार्थना के समाप्त होने के बाद विपटा सूत्रधार के कंधे पर फाँद जाता है।)* राजा बाबू कोठा पर, डोम—डोमिनियाँ भुइयाँ में।

सूत्रधार :— *(पटक कर)* गधे की दुम, तुम्हें कुछ और नहीं सूझता है।

विपटा :— सूझता है, सूझता है, देखिये न *(दिसको*

*करता है)* जिमी जिमी, आजा आजा..........

सूत्रधार :– *(चपत लगाते हुए)* अरे वेवकूफ तुम्हें कुछ बुझने नहीं आता है? मिथिला की संस्कृति तो वैसे ही पिछड़ रहा है और तुम मेंरे आगे डिस्को करते हो।

विपटा :– यौ बाबू साहेब! मैं क्यों करूँ। *(दर्शक की ओर देखकर)* आपलोगों की तरह जिट्–जाट वाला पढ़लाहा–लिखलाहा यह सब करते हैं। मैं तो पान के दुकान पर और मोटर गाड़ी में रोज–रोज सुनता हूॅ। *(नाचैत)*

**कनमा में शोभे बाली, जूड़ा में लगा के जाली**

**बगल बाली जान मारै....................।**

इसे क्या मैं ही बनाता हूॅ? मैं ही खरीदता हूँ और मैं ही बजाता और सुनता हूॅ क्या? आप कान बन्द कर लेते हैं?

सूत्रधार :– *(दर्शक से)* आप सब इस बेवकूफ के फेर में न पड़ें। हम आज आप लोगों के समक्ष अपनी मिट्टी की गंध–सुगंध बिखेरने के लिए उपस्थित हुए हैं। *(अन्दर पुकारते हुए)* अरी ओ मेघना की मॉ! *(अन्दर से:– क्या है?)* जरा सुनो तो।

महिला एक :– *(प्रवेश करते हुए)* क्या कहते हो जी? चिक्कस सान रही थी, आपलोगों के पेट का भी प्रबंध करना है। मर्द लोगों को क्या? बात बनाते रहें।

विपटा :– मालकिन! मैं तो मात्र दो ही रोटी खाता हूँ। मुफ्त का भोज–भात खाते–खाते मालिक का पेट गड्ढा हो गया है।

सूत्रधार :– *(दर्शक से)* आम का बियाह और कटहल का गीत। देखती हो *(महिला की ओर देखकर)* आज कितने महान दर्शकगण तुम्हारे साथ हैं। इनलोगों को अपनी लोक कला से परिचय कराओ।

विपटा :– मालिक, यह लोकला कहाँ से आ गया और किसे कहते हैं? मैं तो लोकला आँख में डालता हूँ लहान का डागडर लिखा था।

सूत्रधार :– अरे बेवकूफ तुम सब दिन ढकलेल और बकलेल रह गया। अपने गाँव–घर के भाखा में जो गीत–नृत्य होता है, जिसमें अपनी मिट्टी–पानी की गंध सुगंध होती है, उसी को लोक कला कहा जाता है।

विपटा :– तो सो न कहिये, आप क्या न माटी पानी गींजने लगते हैं। सुनिये (नाचते हुए गोड़की पतरकी गे....., मारे गुलेलवा, जियरा उड़ि–उड़ि जाय।

सूत्रधार :– *(सिर ठोकते हुये)* कोई समझने के लिए तैयार नहीं है। मैं हार गया हूँ। पता नहिं अपने यहाँ के लोगों के दिमाग में कुछ क्यों नहीं अँटता है?

महिला एक :– *(आँचल आगे सड़काती हुई)* आपलोग

बकबास करिये मुझे बहुत काम है। *(जाने*

*का उपक्रम)*

सूत्रधार :– *(आगे जाकर रोकने का प्रयास करते हुए)* आपका ही काम है। देखिये, हम आप लोगों को 'जट–जटिन', 'सामा–चकेवा', 'बहुरा–गोढ़िन' आदि लोक कलाओं से परिचय करा चुके हैं। आज हमारी इच्छा है कि कुछ ऐसी लोक कला का प्रदर्शन किया जाय जो आम लोगों के मर्म को स्पर्श कर जाय।

महिला एक :– आज की प्रस्तुति है , अपने गाम–घर का लोक नृत्य 'डोमकछ'।

सूत्रधार :– बहुत नेक विचार है।

विपटा :– कुछ नीक प्रोग्राम करिये न, यह क्या 'डोमकछ', आपलोग 'बाभनकछ' क्यों नहीं करते है? *(दर्शक से)* डरते हैं, डोम का मजाको उड़ाने से कुछ होगा नहीं, बाभन तो बर्दाश्त नहीं करेगा।

महिला एक :– दूर अलच्छा, यह तो अलाईये–बलाय बकेगा।

सूत्रधार :– छोड़िये, आप अपनी सुनाइये।

महिला एक :– लड़का के ब्याह के क्रम में जब गाँव से बारात चली जाती है, उस रात गाँव–घर के रक्षा का भार गाँव के स्त्रीगण पर रहता है। गाँव में डोमिन के गीत डोमिन के संग गाने की परंपरा है। इसी नृत्य को 'रतजगा' या 'रत्यौली' कहा जाता है। मिथिला में इस नृत्य की परंपरा नौवीं शताब्दी से चली आ रही है। *(प्रकाश लुप्त हो जाता है। पुनः*

*एक विशिष्ट ताल पर डोम और डोमिन प्रवेश करते हैं।)*

डोम :– अनारवती डोमिनी तों बोल कत' चलि गइलें गे
हरबिसना सन गुनी गवैयाक, नाम तों किये हँसैलें गे?

डोमिन :– बज्जड़ि खसौ तोरा ई देहिया पर, टिकुली सेनुर भुलैलें रे।

डोम :– हरबिसना सन गुनी गवैयाक, नाम तों किये हँसैलें गे?

*(प्रकाश लुप्त हो जाता है। मांदर की आवाज के संग देवहर की धुन सुनायी पड़ती है। उस में डोम भी गा रहा है)*

**कवने देलखिन माता पाँचो रे कलशबा**
**कवने देलखिन पॉचो फूल हे।**
**कुम्हरा देलखिन माता पाँचो रे कलशवा**
**मलिया देलखिन पाँचो फूल हे।**

*(डोमिन सूप–डगड़ा सिर पर रखकर बेचने जा रही है। डोम को गाते देखकर ठिठक जाती है। डोम की नज़र उसपर पड़ जाती है। गीत बीच में ही बन्द हो जाता है। डोमिन मुँह चमकाती चली जाती है। उसके बाद गीत फिर प्रारंभ होता है। आवाज़ धीरे–धीरे कम होने के साथ प्रकाश लोप होता है। मंच का दूसरा भाग प्रकाशित होता है। जहाँ*

*डोमिन सूप–डगड़ा लेकर जा रही है। उधर राजा अपने सिपाही के संग प्रवेश करते हैं। राजा डोमिन की नज़ाकत को हसरत भरी निगाहों से देखते हैं। राजा की नज़र सिपाही की तरफ जाती है।)*

सिपाही :– हरिविशना की बौह। *(राजा हुंकारि भरते हैं। डोमिन अपनी चाल से डाँर लचकाती हुई चली जाती है। राजा एक टक्क उसकी ओर देखता रह जाता है।)*

डोम :– *(प्रवेश करता है।)* मालिक गोर लागी।

राजा :– हरविशना, अरे ऐहन सुन्नरि मौगी कहाँ से लाया रे?
कहमा त' गैलें डोमा, कहमा सँ अइलें, कहमा सँ लइलें सुन्नरि डोमिनियाँ?

डोम :– मेलवात' गइलौं मालिक, मेलवासँ अइलौं, मेलवासँ लइलौं सुन्नरि डोमिनियाँ।

राजा :– जौं तों लइलें डोमा, नीक काज कइलें, कहमा तों रखबें सुन्नरि डोमिनियाँ?

डोम :– जौं ल' अइलौं मालिक, जेहन काज कइलौं, मड़ईमें रखलौं सुन्नरि डोमिनियाँ।

राजा :– मड़ईमें रखलें डोमा, नीक काज कइलें, मुदा की रे खुअइबें सुन्नरि डोमिनियाँ?

डोम :– पेडवा खुअइबै मालिक, लड्डुआ खुअइबै, बरफी खुअइबै सुन्नरि डोमिनियाँ।

राजा :– पेड़वा खुअइलें डोमा, बरफी खुअइलें, मुदा की रे पहिरइबें सुन्नरि डोमिनियाँ?

डोम :– लंहगा पहिरइलौं मालिक, चुनरी पहिरइलौं,
साड़ी पहिरायब सुन्नरि डोमिनियाँ।

राजा :– लंहगा पहिरइलैं डोमा, चुनरी पहिरइलें, कत'
से गहना लइतौ सुन्नरि डोमिनियाँ?

डोम :– मेहनत मजूरी करबै, हँसुली पहिरइबै मालिक,
झुमका पहिरइबै सुन्नरि डोमिनियाँ।
*(गाते–गाते प्रस्थान करता है।)*

विपटा :– (प्रवेश करता हुआ) झुमका गिरा रे बरैलीक
बाजार में, झुमका गिरा रे.............

सूत्रधार :– *(महिला एक के साथ प्रवेश करता हुआ)*
डोमा बहुत काहिल था। डोमिन सूप डगड़ा
बेचकर लाती थी ओर डोम सभी पैसे को
ताड़ी पीने के लिये झटक लेता था।

महिला एक :– आपकी तरह, आप भी मेरी पाई–पाई झटक
लेते हैं।

सूत्रधार :– क्या कहती हो क्या मैं भी ताड़ी पीता हूँ?

विपटा :– आप क्यों ताड़ी पीयेंगें? आपको तो लाल
शर्बत अच्छा लगता है। आप तो लोक कला
के पुजारी है प्योर विदेशी ड्रिंक्स चाही।
इसीलिये मैं शुद्ध देशी पीता हूँ। समझे की
नहीं? (सभी का प्रस्थान)

डोमिन :– *(प्रवेश करते हुए)* डोमा! रे डोमा! अभोगिया
कत' चलि गेल?
डोमा रे डोमा, डोमा रे डोमा
बैसल बेकार छी, ठोकै कपाड़ छी
बाँस लानि दहीं रे.........

डोम :– डोमिन गे डोमिन, बाँस लानि देबौ
जेहे तों कहभीं, सेहे हम करबौ गे। *(कहकर प्रस्थान करता है।)*

डोमिन :– *(कपाड़ पर हाथ देकर बैठ जाती है।)* मैं अकेली कया–क्या करूँ? यह डोमा कुछ करना ही नहीं चाहता है। आज कितने दिन के बाद वह बाँस लाने गया है, पता नही लायेगा भी या नहीं?

डोम :– *(कंधा पर बाँस लाकर आँगन में पटकते हुए। गमछा से घाम पोंछते हुए।)* ला दिया बाँस, अब सूप–डगड़ा बनाओ और उसे बेच लाओ।

विपटा :– *(पहिले से वहाँ आ गया था।)* हरिविशुन भाई, आपके जैसा गवैया जब ऐसे बोलेगा तो कला का भट्ठा नहीं बैठ जायेगा?

डोम :– तो तुम हमारे घर की बात में दखल दोगे?

विपटा :– हरिविशुन भाई, गाँव के मुखिया, एमेले सब किसी किसी की जड़–जमीन हड़प लेते हैं। उसपर दखल कर लेते हैं। मैं बात पर भी दखल नहीं करूँ तब मेरा क्या हाल होगा?

*गीतबामें बोलहीं भैया, गीतबेमें सुनहीं रे*
*गीतबेमें तोहरो परान न नू रे की।*
*भउजी डोमिनियाँ तोरा गाड़ि–मारि करै छौ,*
*तइयो न छोड़ें गीतक ध्यान नू न रे की।*

डोमिन :– बँसवा त' लौलें रे डोमा, सुपती, मउनियाँ रे बनतै,

डगरा बेचइते दिन मोरा जायत रे की।

डोम :– डोमिन गे डोमिन, बाँस लानि देलियौ
जेहे तों कहलहीं, सेहे हम कैलियौ
तइयो नहिं बुझलें, कत्ते सुकुमार छी।

डोमिन :– डोमा रे डोमा, बैसल बेकार छी
बाँस नहिं छीललहीं, ठोकै कपाड़ छी।

विपटा :– *(प्रवेश करैत)* ठोको ठोको और ठोको। शुरुये में कहा तो नहीं माना तो भोगो। आपको मुझसे बेसी नीक हरिविशुन भैया लगा था। जैसी करनी, वैसी भरनी।

डोम :– बाँस लानि देलियौ गे डोमिन, सूपबा दहीं तनी बीन,
सूपबाक बान्हि छानि डोमिन, लाहीं बेचि–बिकीन।

डोमिन :– सूपवा बिनईतें रे डोमा, हथबा दुखाइल मोर,
कत्ते सुकुमार छी रे डोमा,अरे अंगुरी चिरायल मोर।

डोम :– इहे खातिर आगे डोमिनियाँ, बाँस नहिं लाबै रहियौ,
तानी–मनी बिनबैं गे डोमिन, करबें हइयो–दइयो।

विपटा :– वह क्यों करेगा, मैं भी बीनने के लिये तैयार हूँ। आप हरिविशुन भाय की चिन्ता क्यों करती हैं। मैं हूँ न।

डोम :– हाँ,,हाँ, बेसी बड़–बड़ मत कर।

जेहे सूप बिनलें गे डोमिन, ओहे पहिले बेचि लाहीं,
सूपवाक बेचिक डोमिन हमरा, ताड़ी पिलवाहीं।

डोमिन :– हेरे अलच्छा डोमा, देह नहिं जड़ाबें मोर,
बोढ़नीसँ मारबौ रे डोमा, आगि नहिं लगावें मोर।

डोम :– कान पकड़ै छी गे डोमिन, ताड़ी नहिं पीबौ
जेना–जेना कहभीं गे डोमिन,ओनाहीं हम रहबौ।

डोमिन :– हम्मर बात मानभीं त' डोमा, गारी नहिं देबौ,

विपटा :– हमरासँ लड़भीं त' डोमिन, साड़ी नहिं देबौ।

डोमिन :– दुर अलच्छा, तुम तो बीच में ही टभ–टभ करता है।

विपटा :– हे भौजी, टभटभाने के बाद ही सीझता है न।

*(प्रकाश लुप्त हो जाता है।)*

## दृश्य परिवर्तन

*(डोम सूप बेचने के लिये जा रहा है। रास्ते में भजन होते देखकर वह रुक जाता है।)*

कीर्तनकार एक:– अरे हरिविशना डोम खड़ा है, उसको भी बुला लो न।

कीर्तनकार दो :– आंपलोग खूब बोलते हैं । अरे डोम को साथ में नहीं बैठाना चाहिये।

कीर्तनकार तीन:– क्यों भाय? कलाकार की कोई जाति नहीं

होती। वह तो मात्र कलाकार जाति का होता है।

*(हरिविशुन जरा नजदीक आकर बैठना चाहता है)*

कीर्तनकार दो :– अलग ही रहो, अलग ही रहो, डोम जाति होकर तुम हमारी मंडली में शामिल नहीं हो सकते।

हरिविशुन :– मालिक, मुझे आप ऐरू–गैरू कलाकार बुझते हैं? मैंने बड़ी–बड़ी मंडली देखी हैं। आजतक किसी ने जाति वाला प्रश्न नहीं उठाया।

की. एक :– उठाने का सवाल ही नहीं है। भाई जी, जमाना बदल चुका है। हरिविशना गायेगा।

की. दो :– नहीं गायेगा।

की. तीन :– आपको जाना है तो जाइये,, मगर हरिविशुन कलाकार की यह बेइज्जती नहीं हो सकती है।

की. दो :– किसकी मजाल है, जो इसे शामिल करेगा?

की. एक :– आपको मैंने कहा आप जाइये, यह नहीं जायेगा।

की. दो :– हाँ जायेगा।

की. एक :– नहीं जायेगा।

*(हाँ–हाँ, नहीं–नहीं में दोनों व्यक्तियों में मार होने की स्थिति में हरिविशुन चुपचाप खिसक जाता है। प्रकाश लुप्त हो' जाता है। डोम अपमान की घूँट पीकर एक ठर्रा का बोतल पीकर राह में*

*बक बक कर रहा है। दूसरी ओर एक सिपाही आता है।)*

डोम :— *(गीत का आलाप लेते बीच—बीच में शराब की घूँट लेता है।)*
घूँट—घूँट में ज़िनगी......
बोतलमें संसार..........*(हिचकी)*
जे पीयत ओहि जानैत छै..........
बाकि अछि बेकार......*(पुनः हिचकी)*

सिपाही :— (प्रवेश करता हुआ) अरे कौन है रे? ई सड़क पर की करता है रे?

डोम :— सरकार हरिविशना डोम, पू..पू...पूजा करता हूँ सरकार।

सिपाही :— पूजा मंदिर में होता है कि बीच सड़क पर ? आ की गाता था रे? *(हरिविशुन बोतल छिपाने का प्रयास करता है।)* उधर की छिपाता है रे?

डोम :— शीशी——शीशी.......*(छिपाने का असफल प्रयास करता है।)*

सिपाही :— शीशी, शीशी में की है रे?

डोम :— गंगा जल सरकार।

सिपाही :— तनी देखें त' हमहूँ छीट लेते हैं कपार पर, सब पाप कट जायेगा। *(छीनकर कुछ बूँद लेकर कपाड. पर छींटैते हुए)* हुँह....ई त' मँहकता है कैसन दन न। *(नाक सिकोरता है।)*

डोम :— कोलकाता से आगे गंगासागर है न, वहीं से

लाया हूँ सरकार।

सिपाही :– *(हाथ में लेकर सूंघते हुए)* ई त' दारू सन मँहकता है रे हरिविशना। *(दू–तीन डंटा लगाते हुए)* साला हमको ठकता है। मेरे माथा पर छिंटवा दिया। साला दारू पीयें रोज हम और स्वाद–गंध जानो तुम। *(ऐंठते हुए)* गंगाजल है।

डोम :– आब नहीं सरकार।

सिपाही :– *(दो–तीन डंडा लगाते हुए)* साला, हमको ठकता है। गंगा जल है। *(एक डंडा और लगाता है।)* चलो थाना, बन्द करते हैं तुमको। *(प्रकाश डोमिन पर शिफ्ट करता है।)*

विपटा :– भौजी, भौजी, हरिविशुन भाय को सिपाही पकड़ कर ले जा रहा है।

डोमिन :– *(चौंक कर उठती है।)* सो क्यों रे, की कसूर किया है? चलो तो *(तेजी से चली जाती है। प्रकाश सिपाही और हरिविशुन पर। सिपाही उसका कॉलर पकडकर ले जा रहा है। डोमिन प्रवेश करती है।)*

बाबू दारोगा जी..................
कवने कसुरवा पियवा बाँधल मोर
न मोर पियवा डाकू–उचक्का
न मोर पियवा चोर................
न मोर पियवा दारूक मातल
काहे मचाबत शोर..........
भईया दारोगा जी.............

सिपाही :– *(मुँह बनाते हुए)* भईया दारोगा जी........, देखता नहीं है, बिच्चे सड़क पर दारू पीता है।

डोमिन :– *(आश्चर्य से)* दारू? नहीं दारोगा जी, इसने तो दारू कब का छोड़ दिया है।

सिपाही :– छोड़ दिया है, तो ई शीशी में दारू हम पीता है।

डोमिन :– मैं कहती हूँ, दारोगा जी, ग़ल्ती हो गयी। आब नहीं पीयेगा।

सिपाही :– तोंही ठीका लेता है, आब नहिं पीयेगा। ई तोरा देखाक' पीता है। पहले दारू पीयेगा, तब चोरी–डकैती करेगा।

डोमिन :– नहीं दारोगा जी, *(मटकती हुई नजदीक जाकर)* नहीं दारोगा जी, इस बार छोड़ दिया जाय।

सिपाही :– *(साथ में मटकते और हँसते हुए)* हीं हीं. ..तुमको देखकर एकरा छोड़ने का मन करता है। लेकिन नहीं, नहीं छोड़ेगा।

डोमिन :– *(जरा और नजदीक जाकर अदा से)* छोड़ दिजीये न।

सिपाही :– हँ हँ हँ, तों कहती है त' छोड़ना ही पड़ेगा। त' हरिविशना, बोलो आब नहीं न पीयेगा?

डोम :– नहीं सरकार। एकदम नहीं।

सिपाही :– कान पकड़ो। *(डोम सिपाही का कान पकड़ लेता है। सिपाही दो डंडा लगाते हुए)* बेहूदा, हमारा कान पकड़ता है।

डोम :– सरकार आपने ही कहा, कान पकड़ो।

सिपाही :– अपना कान पकड़ने कहा कि मेरा।

डोम :– धत्तेरे की, से यह कहाँ कहे? *(दर्शक की ओर देखकर)* सरकार, आप ही बताइये, इन्होंने साफ–साफ कहा कि किसका कान पकड़ना है?

सिपाही :– अपना कान पकड़ कर उठो–बैठो।

डोम :– *(मासूमियत से)* सरकार, कैसे करूँ हमरा साफ–साफ बता दिजिये, फिर कहीं ग़ल्ती न हो जाय।

सिपाही :– *(कपाड़ ठोकैते हुए)* उठना बैठना नहीं आता है। *(डोमिन के हाथ में डंडा देते हुए)* देखो, ऐसे उठा बैठा जाता है। *(सिपाही उठता–बैठता है। डोमिन गिनती है– एक, दू, तीन........। प्रकाश लुप्त हो जाता है।)*

*(प्रकाश से पुनः मंच प्रकाशित हो जाता है। डोमिन माथे पर हाथ रखकर बैठी हुई है।)*

डोम :– *(प्रवेश करैत)* हरविशनी! हरविशनी!......... ....साली......। आय बोल, कपाड़ फोड़कर रख देंगे, *(डोमिन चुप)* ऐंय, कुछ बोलती क्यों नहीं । क्या हुआ तुमको? तबियत तो ठीक है न? *(डोमिन मुँह घुमा लेती है। डोम डोमिन के स्वर में बोलता है।)* कमाता न खटाता है, रोज–रोज ताड़ी चढ़ाता है। देह देखने में धह–धह। मेरी करम जल

गयी , जो हम इसके घर आई।

डोमिन :— अरे हमरा जी जराता है। रोज–रोज ताड़ी–दारू पीकर पुलिस–सिपाही के लफड़ा में पैर जाता है और हमरा छोड़ाबै में जलील होना पड़ता है। अलच्छा को लाजो नहीं लगता है।

डोम :— लाज क्यों लगेगा? हम अप्पन पीता है, लोगों का क्या? पुलिस और दारोगा दोकान कियेक नहिं बन्न करा देता है?

डोमिन :— आज बाढ़िन से झांटेंगें, जौं आर बेसी बोलेगा तो।

विपटा :— *(प्रवेश करता हुआ)* मामला कुछ गड़बड़ है। की हुआ भउजी, आय फेर ताड़ी पी लिया हरिविशुन भाय की? *(डोमिन चुप)* कुछ कियै नहीं बोलती है?

डोमिन :— *(झल्लाती हुई)* की बोलैंगें? देह जर रहा हैं। डोमा से कह दो' कि हमरा मुँह नहीं दिखाबे।

डोम :— विपटा, डोमिनियॉ से कह दो कि हमरा गोस्सा नहीं चढ़ाबे।

डोमिन :— गोस्सा! डोमा से कह दो कि करनी न धरनी, और छेड़नी नाम। कमाबें खटाबें हम और ताड़ी पिये डोमा।

डोम :— विपटा, डोमिन के लिये ताड़ी लाय दो। हँ हँ हँ...........

डोमिन :— विपटा ! डोमा से कह दो अब हम डूब–धँस

कर अप्पन परान दे देंगे।

डोम :– डोमिन से कह दों हम घर छोड़कर चले जायेंगे।

डोमिन :– कह दों, ओकरा रोकने कौन है?

विपटा :– तोहर सुन्नरि रूप और के?

डोम :– चले जॉयगे तब खायगी क्या?

डोमिन :– जैसे ओकरे कमाय खाते हैं।

डोम :– पूछो तो चले जॉय?

डोमिन :– हाँ, हाँ, कह दो चला जाय।

विपटा :– हाँ, हाँ, चले जाओ।

डोम :– *(अपने–आप)* जाने का मन करता है। फिर मन करता है नहीं जॉय। लेकिन एक्को बार रोकने का प्रयास करे तब न।.............लगता है जाना ही पड़ेगा। *(पैर पटकते हुए चला जाता है। कुछ क्षण के लिये सन्नाटा छा जाता है)*

विपटा :– हरविशुन गेल परदेश गे भौजी
हरविशुन गेल परदेश।
आब नहिं होतय अहाँक भौजी
जीवन में तनिको क्लेश।
*(डोमिन उठकर विपटा को झारू से पीछा करती है। विपटा भागकर नेपथ्य में चला जाता है। डोमिन बैठकर जोर–जोर से रोने लगती है। प्रकाश लुप्त हो जाता है। पुनः संपूर्ण मंच पर रोशनी पसर जाती है। हरिविशुन उदास बैठा*

*हुआ है। उसे अपने घर की याद आ रही है।)*

डोम :– तीन दिन हो गया कोलकता आया हुआ। पता नहीं मुझे क्या हो गया था? आज अनारवती और जलुआ की याद आ रही है। फुटपाथ पर सोता हूॅ। लोग सब इसी लिये यहाँ आते हैं। पैसे भी खतम हो गये। दिन समय एक रंग नहीं हैं, डोमिन को ज़िन्दगी भर हम दुःख देता रहा हूँ। ज़िन्दगी का काहिलपना और घर से विरक्ति आज मुझे इस हाल में ले आया है............। *(प्रकाश मंच के दूसरे भाग पर, जहाँ डोमिन उदास मुद्रा में बैठी हुई है।)*

डोमिन :– मेरा मुँह क्यों नहीं जल गया। तीन दिन हो गया , पता नहीं किस हाल में होंगे जलुआ के बाप? क्या खाते होंगे और कहॉ सोते होंगे?

विपटा :– *(प्रवेश करते हुए, स्वतः)* तेरी जरा का, आज देखिये भौजी का रूदन। *(प्रकट)* हे भौजी, जाने दीजिये हरिविशुन भाय को। हम बाँस ला देंगे। सूप–डगरा बेचकर ला देंगे'।

डोमिन :– विपटा, जले पर नमक मत छिड़को। *(प्रकाश मंच के दूसरे भाग पर जहाँ एक राग में संगीत की आवाज सुनाई पड़ती है। डोम के लिए संगीत एक कमजोरी थी।*

*उसके पांव ठकमका कर रुक जाता है। उसके पैर अपने आप संगीत की दिशा में बढ़ने लगते हैं। प्रकाश मंच के दूसरे भाग में उभरता है। वहाँ मुखर्जी दा हारमोनियम पर गा रहे हैं।)*

डोम :— *(प्रवेश करैत)* दादा, इस राग में कुछ छूट रहा है। इसे ऐसे गाया जाना चाहिये। *(गाकर सुनाता है।)*

मुखर्जी दा :— अहा, ओति सुन्दोर, महाराज आपका पोरिचय?

डोम :— हरिविशुन, मिथिला से आया हूँ।

मुखर्जी दा :— आप कोरता क्या हय?

डोम :— अभी तीन दिन पहिले कोलकोता आया हूँ, नौकरी की तलाश में।

मुखर्जी दा :— बोंगाल में कोलाकार का बहुत इज्जत हाय। आप हमारा सोंगीत कॉलेज में पोढ़ाने सोकता।

डोम :— अहोभाग्य, मैं तैयार हूँ। ज्यादा पढ़ा–लिखा तो नहीं हूँ, मगर संगीत से लगाव है। ऐसे. ..... मैं जाति का डोम हूँ।

मुखर्जी दा :— *(हँसता हुआ)* जाति–पाति होमारा बोंगाल में सब खोतम हो गया हय। कोलाकार का एक ही जाति होता हय, वह है कोलाकार। *(प्रकाश लुप्त हो डोमिन के घर पर जहाँ डोमिन परेशानी की मुद्रा में बैठी हुई है।)*

डोमिन :— तीन बरस बीत गये। जलुआ के बाप का कोई अता–पता नहिं है। मैं कौन उपाय

करूँ? हमर जी जर गया, जे बोल–कुबोल निकल गया मुँह से। न चीठी, न पत्री, न कोनों सम्बाद मिल रहा है। जलुआ अपने बाप के बारे में बार–बार पूछता है। मैं क्या जवाब दूँ? मेरे दरद को कोई नहीं बूझता है।

*(धुनः–पूर्वी)*

*गवना कराये डोमरा,*
*देहरी बैसइल हो,*
*अपनो चलल परदेश हो बिरोहिया।*
*एक मास बीतलै, दूई मास बीतलै हो,*
*बीत गइले तेसर बरिस हो बिरोहिया।*
*नून तेल पैंचा–खूईचा, सेनुर सपनमा*
*कते दिन रहबै, एकल हो विरोहिया।*
*घर पिछुअरवामें कैथा भैया हितवा हो ,*
*हुनकेसँ चीठिया लिखायेब हो विरोहिया।*
*अंचराक फारि हम कागज बनईलौं हो,*
*अंगुरीक चीड़ी स्याही देलहुँ हो विरोहिया।*
*गामक' पछिममामें हजमा भईया हितवासे,*
*एहि चीठी ओत' पहुँचावऽ हो विरोहिया।*
*जही ठईयां देखिहऽ हजमा दस–बीस लोगवा,*
*ओहि ठईयां चीठिया छिपहियो हो विरोहिया।*
*जही ठईयां देखिहऽ हजमा, डोम असकरवा हो*
*ओहि ठईयां चीठिया पसारिहो हो विरोहिया।*
*पहुँचीक बेचि–खूचि खरचा जुटइलौं हो,*
*जल्दीसँ जाहु आ तलासु हो विरोहिया।*

हजाम :– नहीं तहूं करहीं डोमरी तनिको फिकिरिया,

जल्दीसँ करब तलाश हो विरोहिया।

*(चलने लगती है।)*

डोमिन :– *(रुककर)* एगो बात आरो हजमा,जलुआ भी पूछ' लागल,
माँ कहाँ गेल' मोर जनमदाता हो विरोहिया।

*(हजमा का प्रस्थान । डोमिन दूर तक देखती रहती है। प्रकाश धीरे–धीरे क्षीण होता है। संगीत की ध्वनि के साथ मंच पुनः प्रकाशित होता है। डोमिन कमर पर घड़ा लेकर आ रही है। दूसरी ओर से राजा का प्रवेश)*

राजा :– कथिकेर घैलिया, कथीकेर गेडुलियो रे की,
कथि डोरी भरलें सुन्नरि, निरमल पनियो रे की?

डोमिन :– सोनाकेर घैलिया हो राजा, रूपेकेर गेडूलियो रे की,
रेशमक डोरिया हो राजा, भरलौं निरमल पनियों रे की।

राजा :– धूपवामें सूखल सुन्नरि, कंठ अछि मोर पियासल रे की,
एक चुरू पनियाँ द' सुन्नरि, जान मोर बचावहु रे की।

डोमिन :– तोहरोक कैसे राजा, कैसे हम पिलायब पनियों रे की,
हम त' छिकौं आहो राजा, जातिक डोमिनियों रे की।

राजा :– हम नाहीं मानबौ डोमनी, जाति–पाति भेदवा रे की,
हमरोक सालौ सुन्नरि, तोहरो सुरतियो रे की।

डोमिन :– *(पानी पिलाती हुई स्वतः)* बाप रे बाप राजा के दॉत कितना सुन्दर हैं। *(प्रकट)* राजा जी, अब तो पानी पीने के कारण आपकी जाति चली गई?

राजा :– परवाह नहीं है, सुन्दरी! जाति–पाति तो दुनियाँ का बनाया हुआ है। भगवान के धार से कोई जाति बनकर नहीं आता है।

विपटा :– *(मंच के बाँयी ओर से प्रवेश करता हुआ)* बूरल है राजा हो भाय, राजा लोगों का सब दिन यही हाल था। भठ गया।

*(प्रकाश लुप्त)*

(प्रकाश मंच के दायी तरफ पसरता है। वहाँ डोमिन सूप–डगरा लेकर दुकान छानकर बैठी हुई है। कोरस का गीत नेपथ्य से चल रहा है। राजा वहाॅ आकर बैठ जाता है। डोमिन सूप रंग रही है।)

## –:गीत:–

नेपथ्य गीत:– घ'र कऽ पक्षिम एक पक्की रे सड़किया
ओहि ठामे गे डोमनी छानलें दोकनियाँ–2
घोड़वा चढ़ल आबै, राजा जी बरैता
बैसी गेलै हो राजा, डोमनी दोकनियाँ।

डोमिन :– अगल बैसू,बगल बैसू, राजा जी बरैता,
पड़ी जइतो हो राजा, रंगक छिटकिया।

राजा :– तोरे लेखे अगे डोमनी रंगक छिटकिया,
मोरें लेखे गे डोमनी अतर गुलबिया।

डोमिन :– जलुआत' होलै राजा छोट सन टहलुआ,
[illegible] टाका दऽ, ओकर करबै बियहवा।

राजा :– कत्ते दाम बेचबें डोमनी सुपती–मउनियॉं,
कत्ते दाम गे डोमिनी अपनो सुरतिया।

डोमिन :– अन्नी –दुअन्नी राजा सुपती – मउनियाँ,
लाख रुपैया राजा, अपनो सुरतिया।

राजा :– बस, लाख रुपैया? (आगे बढ़कर आँचल पकड़ लेता है।)

डोमिन :– *(आँचल छुड़ाती हुई)* छोड़हो त' छोड़हो राजा, हमरो अँचरवा,
रोवैत होयतै हो राजा नन्हका बलकवा।

राजा :– सुन डोमिन, तुम्हारा नाम क्या है ?

डोमिन :– राजा जी, मैं हूँ अनारवती, डोम का नाम हरिविशुन और एक बेटा है जलुआ।

राजा :– मैं तुम्हारा नाम पूछता हूँ, तुम समूचे परिवार का परिचय देने लगी। मैं कहता हूँ, तुम्हारा डोम परदेश चला गया है। इसमें दो ही संभावना हो सकती है, एक या तो वह दुनियाँ में नहीं है अथवा वह दूसरी औरत के साथ लटपटा गया है। इस स्थिति में मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि तुम अकेली औरत जाति। समाज के लोग आजकल

ठीक नहीं हैं। कितनी प्रताड़ना और लोगों की नज़र झेल सकेगी तुम? मेरी एक बात मानो मेरे साथ चलो और राजमहल में रानी बनकर रहो।

डोमिन :– महारानी! राजा जी, मैं यहाँ रानी बनकर ही रहती हूँ। अप्पन अपने मन का करती हूँ, जैसे चाहती रहती हूँ।

राजा :– सोच लो, जलुआ का ब्याह मैं खूब धूमधाम से करा दूँगा।

डोमिन :– जलुआ का बियाह ? राजा जी यही तो अपना एक अरमान है। माँ के लिये तो बेटा का व्याह का एक बड़ा अरमान होता है। आप यह करा देंगे तब आप जो कहेंगे, मैं वही करूँगी।

राजा :– ठीक है।

डोमिन :– *(आसमान की ओर देखकर)* हे भगवान! जलुआ का बांप जिनगी में होगा तब देखेगा कि बेटा का बियाह राजा कैसे धूमधाम से कराता है। मैं भी क्या करूँ? हजमा सभ जगह से खोजकर आ गया है। जलुआ का बाप न जाने कहाँ बिला गया हो दैबा। *(रोने लगती है।)* यह रूप भी जी का जंजाल हो गया।

*(राजा के साथ प्रस्थान)*

विपटा :– *(प्रवेश करता हुआ।)*

जियाक जंजाल भैलई हमरो सुरतिया

करेजा छूए ला,
जैसे अमुआँक मंजरासँ रस चुए ला
हो कि रस चुए ला।

*(सड़क पर सुपती–मउनी देखकर रुक जाता है।)* अनारवती भौजी, अनारवती भौजी, कहाँ चली गयी? सबकुछ यहाँ पसरा हुआ है। मैं दो बरस से सोच रहा हूँ कि अब मेरी गोटी लाल हों जायेगी। मगर अब तो डोमिन का भी पता नहीं है। *(सभी सुपती–मौनी समेटकर प्रस्थान करता है।)*

*(दूसरी ओर से हरिविशुन नये सुसज्जित परिधान में आ रहा है।)*

डोम :– ढ़ाई बरस के बाद घर आ रहा हूँ। मन में एकटा अजीब तरह के आनन्द की अनुभूति हो रही है। जलुआ अब बड़ा हो गया होगा। वह अपने पैंट–शर्ट देखकर प्रसन्न हो जायगा। अनारो को भी अच्छा कपड़ा खूब अच्छा लगेगा। गाँव के लोग सब जलुआ के ब्याह को लेकर परेशान कर दिया होगा। इस बार अनारो और जलुआ को लेकर मैं कोलकोता जाऊँगा। उसको पढ़–लिखा कर एक दिन बड़े आदमी की कतार में लाकर खड़ा कर दूँगा। बंगाल की महिलाओं को देखकर मुझे लगा कि वहाँ की नारी सब सर्वगुण सम्पन्न होती

हैं। शिक्षा–दीक्षा, गीत–नृत्य और अन्य किसी वाह्य गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेती है।

पहिल महिला :– देखो बहन, हरिविशुन डोम जैसा लगता है, मगर इतना जिट–जाट में कहाॅ से आ गया ?

दोसर महिला :– लेकिन, डोमिन का पता तो कितने दिनों से नही है।

तेसर महिला :– अब तो उसके घर–द्वार का भी पता नहीं है। सब गिर गया है। *(सामने से हरिविशुन आता है।)*

डोम :– गोर लागी दैया जी।

पहिल महिला :–क्या रे हरिविशुन, कहाॅ चला गया था? डोमिन तो तुम्हारी बाट जोहते–जोहते न जाने कहाॅ चली गयी।

डोम :– और जलुआ ?

दोसर महिला :– क्या सोचते हो कि माय तुम्हारे जैसी कसाय होगी कि एक मात्र पुत्र को छोड़कर चली जायेगी।

*(हरिविशुन माथे पर हाथ रखकर बैठ जाता है। महिलाओं के जाने के बाद हरिविशुन घर की तरफ बढ़ता है। घर के नजदीक जाकर माथे पर हाथ रखकर बैठ जाता है।)*

डोम :– कहाँ गयी होगी डोमिन आ जलुआ ? यह मैंने क्या कर दिया? अब हम किसके लिये

कमायेंगे और किसके लिये जीयेंगे ?

हजाम :— *(प्रवेश करते हुए)* हरिविशुन भाय, कब आये ? चलिये। *(हरिविशुन ब्रीफकेश उठाकर हजाम के साथ चल देता है। रास्ते में लोग देखते हैं उसका ठाठ—बाट।)*

पुरुष एक :— की रे हरिविशुन, तुम मौगी को बेलाकर कहाँ चला गया था? हमलोगों को लगन पाति में कितना दिक्कत हो गया।

हजाम :— मालिक आ गया हूँ,अब सब ठीक हो जायेगा।

डोम :— *(हजाम से)* ठाकुर भाई, आपको कुछ पता है?

हजाम :— डोमिन की चीठी लेकर मैं कोलकाता में कहाँ—कहाँ नहीं भटका। तुम्हारा कहीं नहीं पता मिला। मैं निराश होकर लौट आया।

डोम :— मैं तो कोलकाता में ही था। वहीं कॉलेज में संगीत पढ़ाता हूँ।

हजाम :— *(उत्साहसे)* वाह भाय, अब तुम वहाँ कॉलेज में प्रोफेसर हो गये?

डोम :— *(निराशा के साथ)* मगर होने से क्या फायदा? ठाकुर भाय, कोई कमाता—खटाता है परिवार के लिये ही न। जब डोमिन और जलुआ का कहीं पता नहीं है तो मैं किसके लिये कमाऊँ?

हजाम :— तुलसी बाबा ने कहा है—
धीरज धरम मित्र अरु नारी,

आपत काल परखिये चारी।
अब कितने दिन के बाद आये हो पहले चाय हो जाय, फिर भोजन–भात होने के बाद सोचा जायगा।

## (दृश्य लोप)

*(प्रकाश राजा के घर पर उभरता है। डोमिन सोलहो श्रृंगार करके राजमहल में राज कर रही है। राजा के परिवार में काना–फूसी आ तनाव व्याप्त है।)*

राजा की माँ :– इस उढ़री–ढ़ेहुरी को लाकर रख दिया है घर में। मैं इस बात को कहाँ कहूॅ? उसके नजदीक कोई नहीं जाता है। उसकी सेवा–टहल के लिये दाय–नउरी लगी हुई है।

राजा की बहन :–मेरा तो मन करता है कि उस मौगी का मुँह तोड़ दूँ। भाभी कुछ बोलती ही नहीं है।

रानी :– क्या बोलूँ राजा तो उसके चन्द्रमुख पर रीझ गये हैं। मेरी तरफ तो वे अब घूर कर भी नहीं देखते हैं।

राजा की मॉ :–किसें कहूॅ? लोग सब इस घटना को सुनकर मजाक ही उड़ायेंगे। खानदान की इज्ज़त खाक में मिल गयी।

राजा की बहन :–और भाभी की ज़िन्दगी की चिन्ता किसी को नहीं है।

*(प्रकाश राजमहल के दूसरे भाग में शिफ्ट करता है। जहाँ राजा और डोमिन पान की*

*गिलोरी खाकर पलंग पर बैठी हैं।)*

डोमिन :— *माई तोहर कहौ राजा उढ़री पुतहुआ बहिनी त' कहौ हमरा उढ़री भउजईया। भौउजी तोहर राजा नीको नहिं लागै छौ रानी कहौ हमरा उढ़री सौतिनियाँ।*

*राजा :— अम्मा मोर मरतै धानी, बहिन ससुररिया, गोतनोक गारी धनियाँ पइचा–पलटिया। कनियॉक बाँधब धानी, टुटल झोपरिया, (प्यार से) हम–तोहूँ रहवै धनियॉ लाली रे पलंगिया।*

*(प्रकाश लुप्त होता है। प्रकाश मंच के दूसरे भाग में जाता है। जहाँ राजा की माँ आदि बैठी हुई हैं )*

चूड़ीहारा :— *(नेपथ्य से)* चूड़ी लो, चूड़ी।

राजा की बहन :— माँ, चूड़ीहारा आया है। मैं चूड़ी पेन्हूँगी।

राजा की माँ :— बुला लो।

राजा की बहन :— चूड़ीहारा ! चूड़ीहारा! आ जाव।

*(चूड़ीहारा आकर बैठ जाता है और रंग–विरंग की चूड़ी दिखाने लगता है।)*

रानी :— *(चूड़ी की ओर ईशारा करके)* यह चूड़ी मेरी ननद को पहनाओ।

*(चूड़ीहारा चूड़ी पहनाने लगता है। पहनाने के क्रम में चूड़ी अधिक फूटती है।)*

राजा की माँ :— तुम अनारी चूड़ीहारा हो इसलिये ज्यादा चूड़ी फूटती है।

चूड़ीहारा :— हाँ महारानी जी, मैं चूड़ीहारिन के संग चूड़ी बेचता था। वह गुस्सा से नैहर चली गयी है,

इसलिये मुझे चूड़ी पहनाना पड़ता है।

दासिन :– *(अन्दर आकर)* अन्दर रानी जी भी चूड़ी पहिनेंगी।

चूड़ीहारा :– तो बुला लाओ।

दासिन :– अन्दर ही आना पड़ेगा।

*(प्रकाश लुप्त होकर डोमिन के महल में शिफ्ट होता है। डोमिन वहाँ घुंघट में है। चूड़िहारा उनका हाथ पकड़ चूड़ी पहनाने के क्रम में हाथ दबाता है।)*

डोमिन :– मेरे हाथ क्यों वैसे दबाते हो चूड़ीवाला?

चूड़ीहारा :– आज मैं पहिली बार राजा के घर में ऐसा हाथ देख रहा हूँ।

डोमिन :– ऐसा हाथ, तुम्हारे कहने का क्या तात्पर्य?

चूड़ीहारा :– जी नहीं, कुछ तात्पर्य नही है। मगर राजपरिवार में रानी सबका हाथ इतना कड़ा नहिं होता है।

## *(दृश्य परिवर्तन)*

*(डोम डोमिन की खोज में पागल जैसा घूम रहा है। दूसरी ओर से चूड़ीहारा आ रहा है।)*

चूड़ीहारा :– राम राम हरिविशुन भाय। कहाँ घूम रहे हो?

डोम :– पता नहीं डोमिन जलुआ के संग कहाँ चली गयी है।

चूड़ीहारा :– एक बात कहूँ भाय, राजा की हवेली मैंने आज एक महिला को चूड़ी पहनायीं। उसका हाथ बहुत कड़ा था। अपने को रानी कहनेवाली

वह औरत घूंघट में थी। बोली भी भारी लगती थी। *(सोचते हुए)* मुझे शक है कि कहीं वह डोमिन ही तो नहीं थी?

डोम :— *(आशा की एक किरण नज़र आती है, वह नेपथ्य की ओर दौड़ जाता है।)* अनारवती.....! अनारवती..........! (प्रकाश लुप्त)

## —:(दृश्य परिवर्तन):—

*(डोम दौड़ते हाँफते आता है। सामने राजा का दरबान खड़ा है। डोम रुककर दरबान से हाथ जोड़कर कुछ पूछता है। दरबान का नकारात्मक उत्तर मिलता है।)*

डोम :— बाबूराम बाबूराम डगरा बेचईते डोमनी हेरायेल रे की।

दरवान :— भैयाराम भैयाराम इहो रे हवेलिया डोमनी न आयल रे की।

डोम :— बाबूराम बाबूराम खोल' न दरबजवा डोमनीक हेरब रे की।

*(डोम अन्दर घुसने का प्रयास करता है। दरबान रोकने का असफल प्रयास करता है। मगर डोम जान पर खेलकर अन्दर घुस जाता है। नेपथ्य में शोर सुनकर डोमिन बाहर निकलती है। एक तरफ से डोम को कुछ सिपाही पीटते हुए प्रवेश करते हैं। डोम को देखकर डोमिन दौड़कर आती है और उसे छोड़ने का आदेश देती है। डोमिन दौड़कर डोम से*

*लिपट जाती है। डोम उसे लेकर अन्दर चला जाता है। प्रकाश लुप्त होता है।)*

*—:(दृश्य परिवर्तन):—*

डोम :— *(डोम डोमिन का हाथ पकड़कर प्रवेश करता है)*

विपटा :— *(प्रवेश करते हुए)* भौजी हे भौजी, कहाँ चली गई थी हे भौजी। *(डोम की ओर देखकर)* यह क्या हाल हो गया तुम्हारा हरिविशुन भाय?

डोम :— हाल कहीं गे डोमिनिया, हाल कहीं गे राजाक हवेलियाक हाल कहीं गे।

डोमिन :— मारि खइभीं रे डोमा मायर खइभीं रे राजाक सिपहियासँ मारि खैयभीं रे।

विपटा :— क्यों मारेगा भउजी, किअय मारेगा? *(दर्शक के तरफ देख कर)* राजा के अन्दर का हाल गड़बड़ है तब तो।

डोम :— हम गेलहुं विदेश डोमनी, तहूँ किये भागलें हाय रे डोमरी
जलुआक' ल' क' संग—संग, हाय रे डोमरी।

डोमिन :— तह् गेलें पराय डोमरा, हम की करतियै हाय रे डोमरा
हमरासँ राजा गेल लोभाय, हाय रे डोमरा।

डोम :— झगड़ा करैत रहल्हीं, गइलौं कोलकातवा हाय रे डोमरी
ओत' लागलौं पढ़ाबे संगीत, हाय रे डोमरी।

डोमिन :— हमें की जानल्रियै संगीत आ पढ़ौनी, हाय रे डोमरा

सहैत रहलौं भाँति–भाँति नज़र हाय रे डोमरा।
राजाक रानी बनि सुखक' संदेस, हाय रे डोमरा
सपना छल जलुआक' बियाह, हाय रे डोमरा

डोम :– चलें चलें आगे डोमरी, अपन घर–द्वार हाय रे डोमरी
तो‹ › पर छौ दार–मदार, हाय रे डोमरी।

डोमिन :– राजा जा‹ › घर सोना–चाँदीक खजनमा हाय रे डोमरा
कोना जाइब ई सभ छोड़ि–छाड़ि, हाय रे डोमरा ।

डोम :– हमरासँ नीक तोरा सोना चाँदी लागौ हाय रे डोमरी
हम अब जइबौ डूबि–धँसि हाय रे डोमरी।

डोमिन :– ई की कहैं छें डोमा, नीक नहिं लागै छै, हाय रे डोमरा
हम त' चलब तोहर संग हाय रे डोमरा।
जेहे लिखल भाग्यमें हमर हाय रे डोमरा
जलुआक करब बियाह हाय रे डोमरा।

डोम :– जलुआक करब बियाह हाय रे डोमरी।

डोमिन :– जलुआक करब बियाह हाय रे डोमरा।

*(प्रकाश के साथ गीत की अवाज़ क्रमशः कम होती है।)*

*—:समाप्तः—*

डा० अनिल पतंग

एम.ए. (द्वय), एम.डी. (ए.एम.)
एस. आर., डी.टी., डी.एफ.,
एन.ई.टी. (यू.जी.सी.)

सम्पर्क -
नाट्य विद्यालय,
बाघा, पो0-एस0 नगर
बेगूसराय (बिहार) 851218
चल वार्ता - 9430416408

## रचनाकार परिचय

पूर्व हिन्दी अधिकारी,
दूरदर्शन (प्रसार भारती)
पूर्व सदस्य, संगीत नाटक अकादमी
(बिहार सरकार)
निदेशक-नाट्य विद्यालय, बेगूसराय
(Govt. Regd.)
पूर्व प्रधान संपादक - सम्पर्क
सम्पादक - रंग अभियान (नाट्य पत्रिका)
अनेक अन्य पत्रिकाओं एवं स्मारिकाओं के संपादक
अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं से संबद्ध

**प्राप्त सम्मान -**

कला श्री
कला शिरोमणि
संस्कृति सूत्रधार
सहस्राब्दी सम्मान
भिखारी ठाकुर राष्ट्रीय शिखर सम्मान
जगदीशचन्द्र माथुर सम्मान
रजत जयन्ती सम्मान
अनिल मुखर्जी शिखर सम्मान
कृष्णचन्द्र बेरी सम्मान
सर्वोत्तम नाट्य निर्देशक
(बिहार सरकार)-1994 और 2002

**प्रकाशित रचनाएँ-**

नाट्य पुस्तकें-दीवार, प्रजातंत्र, कीमत,
जट-जटिन/ सामा-चकेवा, डोमकछ,
लोककथा रूपक, हमारे लोकधर्मी नाट्य (सं.)
दर्जनों नाटकों, कहानियों, कविताओं के
अलावा सैकड़ों अन्य रचनाएँ प्रकाशित।
सैकड़ों नाटकों में अभिनय एवं निर्देशन,
कई राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के
नाट्य प्रतियोगिताओं में निर्णायक
कई धारावाहिकों एवं फिल्मों में अभिनय,
पटकथा लेखन तथा निर्देशन।